International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(5): 133-134

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(5): 133-134
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 27-07-2017
Accepted: 28-08-2017

डॉ0 सुशीला कुमारी
सहायक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग,
महिला महाविद्यालय, झोझू कलां
चरखी दादरी, उत्तर प्रदेशए भारत

Correspondence
डॉ0 सुशीला कुमारी
सहायक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग,
महिला महाविद्यालय, झोझू कलां
चरखी दादरी, उत्तर प्रदेशए भारत

देवीभागवत एवं दुर्गासप्तशती के संदर्भ में शाक्त संस्कृति

डॉ0 सुशीला कुमारी

प्रस्तावना

संसार में जो कुछ भी हम देख, सुन और समझ रहे हैं यह सब कुछ परिवर्तनशील दृश्य मातृ–शक्ति के अतुल प्रभाव का ही परिणाम है। वैदिक वाणी में मातृ–शक्ति के अनन्त प्रभाव का वर्णन बहुत ही मर्मस्पर्शी किया गया है। इस महाशक्ति का आत्म परिचय देते हुए ऋग्वेद में कहा है कि ' मैं धन की आदिस्वामिनी हूँ। मैंने सनातन रूप से सभी धनों को वश में किया हुआ है। मुझे पिता की भाँति धनप्राप्ति के लिए पुकारते है। मेरे दिए में से देने वालों को मैं भोजन योग्य धन देती हूँ। मैंने अपने पुत्र रूपी मनुष्य को रहने के लिए भूमि दी"। मैं बार–बार शब्द करने वाले जल को पृथ्वी पर लाती हूँ।[1] मुझ परा–शक्ति अन्तरात्मा के देने से ही मनुष्य अन्न को खाता है। मेरे सम्मान का जिन्हें ज्ञान नहीं होता वे मनुष्य शनैः शनैः दुर्गति को प्राप्त करके अंततः विनाश को प्राप्त कर लेते हैं।[2] विद्वानों और सम्पूर्ण मनुष्यों से प्रेम करने योग्य मैं ही हूँ। जिसको चाहती हूँ उसे तेजस्वी बना देती हूँ।[3] मैं ही सज्जनों को रूलाने वाले तथा निरपराध प्रजा का उत्पीड़न करने वालों के लिए धनुष को खीचती हूँ और द्युलोक और पृथ्वीलोक में सब ओर व्याप्त मैं ही हूँ।[4]

पृथ्वी पूजा–मातृ–शक्ति की दुर्गासप्शती में धारण प्रकृति की प्रतीति कराते हुए कहा गया है कि दे देवि! तुम्हीं ने इस समस्त विश्व को धारण किया हैं।[5] और पृथ्वी रूप में आप सम्पूर्ण संसार को धारण किए हुए है।[6] ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य तथा दो प्रकार के शूद्र आपकी ही संतान है। इन पाँचो प्रकृति के जीवों के लिए उदित होकर सूर्य अपनी किरणों से जीवन–ज्योति का विस्तार करते हैं।[7] वैदिक ऋषि तो भारतमाता की कृतज्ञता के कारण कहते है कि हे भारतमाता! तुम्हारी गोद हम लोगों के लिए नीरोगिता देने वाली है। हम आपके पुत्र है''। हमारी आयु लम्बी हो और हम तुम्हारी रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले बनें।

आज का मानव अपनी भौतिक प्रगति के अंहकार में बेसुध है। वह पृथ्वीमाता की अखण्ड एकता को भूल गया है। ज्ञानियों के चित्र को भी महामाया, मोहग्रस्त कर उससे अनुचित कार्य करवाता है इसलिए दुर्गासप्तशती में पृथ्वीमाता के लिए 'जगत स्त्वमेका' अर्थात् तुम एक ही हो कहा गया है।, जिससे मानव ' माता पृथ्वी पुत्रोऽहं पृथिव्याः'' का अनुभव कर भेद कलुष से मुक्ति प्राप्त कर शान्ति के शाश्वत सुख का अनुभव कर सके। दुर्गासप्तशती में महामाया दुर्गा के रूप में उनकी महिमा का वर्णन किया गया है।[8] सीताजी का भी सभी दुखों को हर लेने की क्षमता भी दृष्टिगोचर होती है।[9]

आलोकमयी आह्लाद–शक्ति की पूर्णता के प्रत्यय यदि श्री राम हैं तो अन्धकारमयी संहार–शक्ति का प्रत्यय रावण है। सीताजी दैवी तथा आसुरी दोनों प्रवृतियों में अपने सद्–असद् दोनों ही प्रभावों की प्रतीति सतत् लगातार कराती रहती है। राम–रावण संघर्ष वास्तव में सीता–चरित का ही आख्यान है और दुर्गासप्तती में भी मातृ–शक्ति की प्रतीति सत्–असत् दोनो ही रूपों में होती है।[10] महर्षि वाल्मीकि ने आदिकाव्य रामायण में यदि श्रीरामजी के लिए 'रामो रमयतां वरः'' कहा है तो वहीं रावण के लिए 'रावणो लोकरावणः' कहा है। एक सज्जनों को हँसाता है तो वही दूसरा रूलाता है। रामलीला में जहाँ राम का अवतार प्रतिवर्ष होता है तो वहीं रावण का पुतला प्रतिवर्ष जलाया जाता है।[11] पार्वती का वर्णन करते हुए दुर्गासप्तशती में कहा गया है कि समस्त दशों दिशाएं पार्वती के हाथ है और आकाश में दिशाओं के वस्त्र पहले हुए चन्द्रमा को सिर पर धारण किए हुए शिव पूजित हो रहे हैं। सृष्टि की विराट् सत्ता में आत्मसत्ता को अभिन्न रूप से देखने के पश्चात् सिद्धि साधना के अध्वसाय की बाधा दूर की जा सकती है। जड़ता के व्यामोह से ऊपर उठने के लिए जड़ में चेतन की पूर्णता की प्रतीति परम वाञ्छित होती है इसलिए राम विश्व प्रकृति की चिरंतन ज्योति के रूप में दुर्गा की सम्पूर्ण बाधाओं का निराकरण करती है।[12] इस विषय में स्वयं माँ दुर्गा कहती भी है।[13]

आज श्री राम जी के हाथों में न तो धनुष है और न ही तरकस। जटा के समूह का मुकुट के समान बँधा हुआ दृढ़रूप भी नहीं है।

पूजा के पश्चात् दशदिशारूपी भुजाओं वाली दुर्गाजी के नाम का जप करते है। जप की सीमा पूरी करने के पश्चात् एक नीला कमल देवी के चरणों में चढ़ाते है। ज्यो–ज्यों शक्ति उनमें उद्बुद्ध होती है। त्यों–त्यों उनकी अधोगामिनी प्रतिक्रिया परिवर्तित होकर ऊर्ध्वगामिनी सक्रियता का अद्भुत परिचय देती है। व्यक्ति के भीतर छिपी कुण्डलिनि(दुर्गारूप) शक्ति जब ऊर्ध्वस्तर की गतिशीलता प्राप्त करती है तब समस्त सिद्धियों की प्राप्ति सहज ही हो जाती है।

ईश्वर, ब्रह्म, विष्णु, शिव, राम और कृष्ण की सभी गतिविधियों , क्रिया–कलापों में माया, सरस्वती, लक्ष्मी–पार्वती–सीता तथा राधा ही कारण हैं। सांख्य शास्त्र में यहीं प्रकृति अमृतकला है।[14] यह महाशक्ति ही शारीरिक विकार, मोह, अंहकार, आलस्य, राग–द्वेष तथा वासना के प्रतीक मधुकैटभ, महिषासुर, शुंभ–निशुम्भ, धूम्रलोचन, चण्ड–मुण्ड तथा रक्तबीज का धर्मसिँह पर आरूढ़ होकर प्रभुत्व स्थापित करने वाले विविध अस्त्र–शस्त्रों से करोड़ो दुष्प्रवृत्ति रूपर असुरों के साथ ही लीला में ही विनाश कर देती है। यहीं देवी तृतीय नेत्र से ज्ञान की वर्षा कर विद्वानों को अमृत प्रदान करती है। देवी तथा ब्रह्म में वास्तविक भेद नही है। मैं और ब्रह्म एक ही हैं। मुझमें और ब्रह्म में लेशमात्र भी भेद नही है। जो वह है वही मैं हूँ और जो मैं हूँ वही वो हैं। जो वह है वही मैं हूँ और जो मैं हूँ वही वो है। जो आप भेद देखते हो वह केवल मति–भ्रम के कारण ही है।[15] कुछ लोग वागमार्गी उपासना पद्धति को देखकर शक्ति–उपासना पर नैतिक पतन का दोषारोपण करते हैं जो कि सर्वथा अनुचित है। 'स्त्रियः समस्ताः सकलाः जगस्तु' से अधिक नारी सम्मान की भावना संसार में कही भी नही मिलेगी। देवी भक्त को स्त्रीनिन्दा, प्रहार तथा कुटिलता नहीं करनी चाहिए।[16] माता दुर्गाजी के शील को ही दुराचारियों के दुष्टाचरण का विध्वसंक माना है।[17] आदिशक्ति वेदमाता गायत्री की उपासना करती है। इसलिए सभी द्विज शाक्त हैं–शैव–वैष्णव नहीं।

लोक व्यवहार में देखा गया है कि बच्चा पिता की अपेक्षा माता को ही अधिक चाहता है क्योंकि माता ही स्वभावतः सहृदया और वात्स्ल्यमयी होती है तथा अपने बच्चे की सभी आवश्यकताओं का पूर्ण ध्यान भी रखती है। इसलिए श्रीमच्छकड्.राचार्य महाराज माता की इस प्रकार की प्रार्थना करते हैं कि आपति में मग्न रहने पर यदि आपका स्मरण किया जाता है तो यह मेरी कोई मूर्खता नहीं है क्योंकि जब बालक भूखा होता है तो वह सर्वप्रथम माता का ही स्मरण करता है।[18]

निष्कषर्तः आज का विश्व शक्ति–उपासना की महतीसिद्धि की स्पर्धा में ही अनवरत सचेष्ट है। वैज्ञानिक भी एनर्जी, नेचर, पावर, आदि नामों से शक्ति के महत्तव को स्वीकारते है। शक्ति–उपासना आन्तरिक एवं बाह्य दो रूपों वाली है। साधन के बाह्य रूप अनेक हो सकते हैं परन्तु साध्य रूप महाशक्ति एक ही है–और वह है देवी–शक्ति। समष्टि की सम्पूर्ण शक्तियाँ आत्मा में ही केन्द्रित है और इस आत्मशक्ति को जागृत करने पर ही लौकिक एवं अलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। जीवत्व की शिवत्व में परिणति ही मानव–जीवन का परम लक्ष्य है। अतः दुर्गासप्तशती में मातृ–शक्ति की महाकाली उपासना में महाकाली माँ की उपासना का संदेश आरम्भ में ही दर्शित है।

शक्ति के बिना मनुष्य अपने जीवन के व्यवहारिक क्षेत्र से सर्वथा अनभिज्ञ हो जाता है। महाकालरूपिणी अभिधा शक्ति के पूर्ण बोध की स्थिति में बाल्यजीवन की दुष्क्रियता रूपी आसुरी शक्ति का समूल विनाश हो जाता है। सात्तिवक गुणों की प्रतिष्ठा के लिए बुद्धि और हृदय को निश्चल, निर्मल एवं श्रद्धा युक्त बना देती है। जहाँ साक्षात् संकेतित अर्थ का बाध हो, कोई हेतु या प्रयोजन हो, वहाँ साक्षात् अर्थ से सम्बध रखने वाले नवीनतम अर्थ की प्रतीति लक्षणाशक्ति के द्वारा ही होती है।

संधर्व सूची

1. अहं भूमिम् ..... केतुमआयन्। ऋग्वेद 4/26/2
2. मया सोऽन्नम् ..... ते वदामि। ऋग्वेद 10/125/4
3. अहमेव स्वयम् ..... तं सुमेधाम्।। ऋग्वेद 10/125/5
4. अहं रूद्राय ..... आविवेश। ऋग्वेद 10/125/6
5. त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्। प्रथम अ0 75.
6. आधारभूता जगस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि। दुर्गासप्तशती 11/4
7. पंचमानवाः ..... आतनोति। अथर्ववेद 12/1/15
8. त्वयैतद्धार्यते ..... जगन्मये।। दुर्गासप्तशती 1/75, 1/76
9. दुर्गे ..... सहार्द्रचित्ता। दुर्गासप्तशती। 4/17
10. यच्चकिञ्चित्क्वचिद्वस्तु ..... स्तूयसेमया। दुर्गासप्तशती 1/72
11. नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिंद ततम्। रामायण 1/64
12. सर्वाबाधा ..... कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्। दुर्गासप्तशती 11/39
13. इत्थं यदा–यदा ..... संक्षयम्। दुर्गासप्तशती 11/35
14. पुरूषे षोडश कले तामाहुरमृतां कलाम।। सांख्यशास्त्र
15. सदैकत्वं न भेदोऽस्ति ..... मतिविभ्रमात्। देवीभा0 3/6/2
16. स्त्रीणांनिन्दा ..... भक्तोविवर्जयेत्। देवी0 भा0
17. दुर्वत्तशमनम् तव देवि शीलम्।। दुर्गासप्तशती 4/2
18. आपत्सु मग्नः ..... जननीं स्मरन्ति।। देव्युपराधक्षमायन0